समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ४.५०

लोक कल्याण सेतु

रजि. समाचार पत्र

• प्रकाशन दिनांक : १५ अक्टूबर २०२३ • वर्ष : २७ • अंक : ०४ (निरंतर अंक : ३१६)

• भाषा : हिन्दी • पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

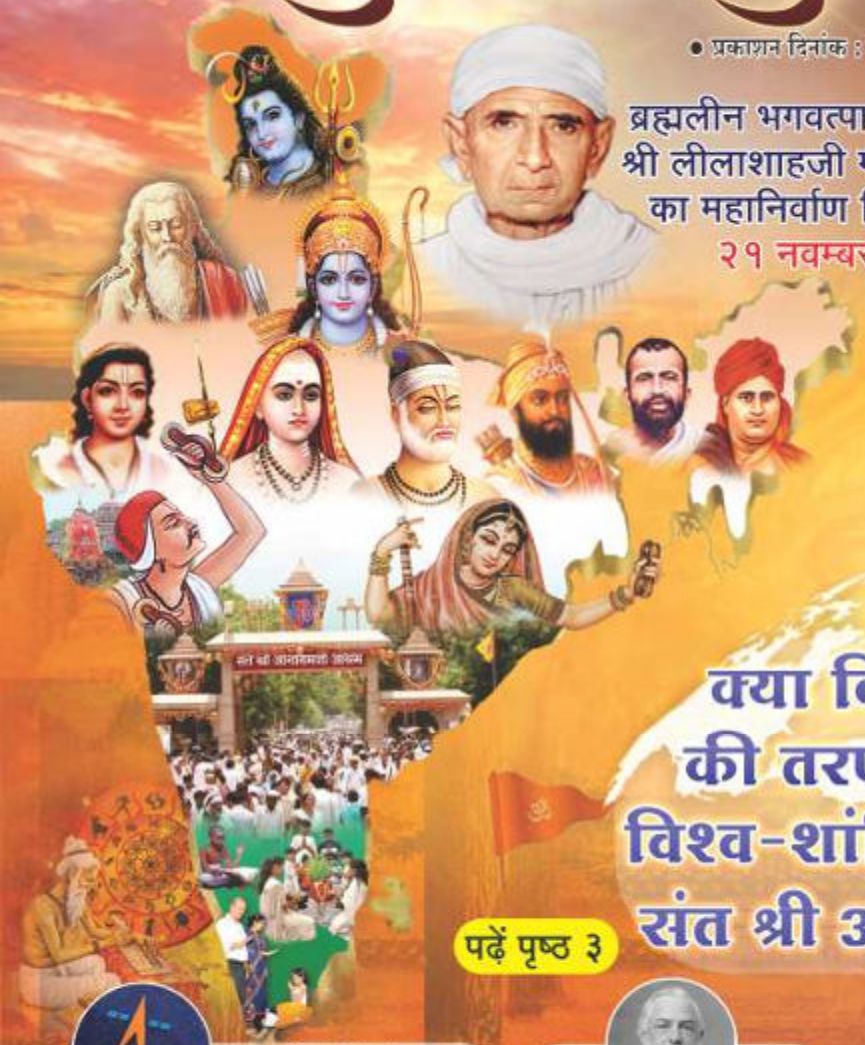

ब्रह्मलीन भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज का महानिर्वाण दिवस

२१ नवम्बर ९

धन्यं हि भारतवर्ष
धन्या भारतसंस्कृतिः ।
भारतीया जनाः धन्याः
धन्यास्माकं परम्परा ।।

विश्व संस्कृति का उद्गम-स्थान पढ़ें पृष्ठ ६

भारतवर्ष

क्या विश्व तीसरे विश्वयुद्ध की तरफ अग्रसर हो रहा है ? विश्व-शांति हेतु क्या उद्बोधन है संत श्री आशारामजी बापू का ?

पढ़ें पृष्ठ ३

"ब्रह्मांड की संरचना, बीजगणित, धातु विज्ञान, वायुयान-चालन तथा समय के सिद्धांत का सर्वप्रथम उल्लेख वेदों में मिलता है । बाद में वे सिद्धांत यूरोप पहुँचे और उन्हींको पश्चिमी वैज्ञानिकों की खोजों के रूप में स्वीकारा जाने लगा ।" - डॉ. एस. सोमनाथ, अध्यक्ष, इसरो

"भारत में मानव-मस्तिष्क का सबसे अधिक विकास हुआ है और यहीं जीवन की बड़ी-में-बड़ी समस्याओं का समाधान खोज निकाला गया है ।" - मैक्स मूलर, प्रख्यात विद्वान, जर्मनी

"हमारे (पश्चिमी देशों के) पास जो भी ज्ञान है वह हमें गंगा-तट (भारतभूमि) से ही प्राप्त हुआ है ।" - वोल्टेयर, प्रसिद्ध तत्त्वचिंतक, फ्रांस

"प्लेटो व पाइथागोरस भारतीय दर्शनशास्त्र के सिद्धांतों में विश्वास करते थे तथा अपने को इनके रचयिताओं के ऋणी मानते थे ।" - सर एम. मोनियर विलियम्स

दीपावली पर्व १० से १५ नवम्बर

आधिभौतिक, आधिदैविक दिवाली तो मिलती रहती है लेकिन जिसको आध्यात्मिक दिवाली मिलती है, जिसका अध्यात्मज्ञान एक बार जग जाता है तो बस, उसने सब कुछ कर लिया । ४

सुख-समृद्धि हेतु देव दिवाली पर करें ये उपाय १८

...इसके परिणाम विपरीत होंगे

- आचार्य श्री कौशिकजी महाराज, कथा-प्रवक्ता १३

हिन्दू धर्म पर हो रहे कुठाराघात के खिलाफ एकजुट होना पड़ेगा

- आचार्य श्री सुशीलजी, भागवत कथाकार १३

भारतीय संस्कृति महान क्यों ?

भारतीय (सनातन) संस्कृति की गौरवगाथा विश्वभर में गायी जाती रही है। इस पर गर्व करने के लिए हमारे पास निम्नांकित ठोस कारण हैं :

(१) ऋषि-प्रणीत आचरण प्रधान संस्कृति : यह संस्कृति ऋषि-प्रणीत आचरण प्रधान संस्कृति है। ऋषिगण स्वयं संस्कारवान, विश्वहितैषी और समता के दर्शन से ओतप्रोत अतिमानवीय क्षमताओं से पूर्ण रहे हैं।

(२) वेदनिःसृत अमृत रस : चारों वेद भगवान के निःश्वास हैं, उनके प्राणस्वरूप हैं। ईश्वर के अस्तित्व एवं उनकी सृष्टि का बोध करानेवाला दिव्य ज्ञान वेदों में ही वर्णित है।

(३) उदारता एवं व्यापकता से पूर्ण : इस संस्कृति में प्राणिमात्र के कल्याण की कामना की गयी है। **'सर्वे भवन्तु सुखिनः...'** तथा **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की उदार घोषणा करने की क्षमता भारतीय संस्कृति के अतिरिक्त विश्व की अन्य किसी भी संस्कृति में नहीं है।

(४) चरम दार्शनिक तत्त्व से ओतप्रोत : यह उदार और व्यापक ही नहीं, चरम दार्शनिक तत्त्व से ओतप्रोत भी है। यह सारे चराचर जगत में एक ही परम तत्त्व को देखती है।

एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे । (श्री गुरुग्रंथ साहिब)

सीय राममय सब जग जानी । करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी ।।

(श्री रामचरित. बा.कां. : ७.१)

तथा **आत्मवत् सर्वभूतेषु...** सब प्राणियों के प्रति अपने जैसा बर्ताव करना, यह व्यापक दृष्टिकोण, अद्वितीय तत्त्वचिंतन लेकर सनातन संस्कृति चलती है।

(५) समग्रता : यह संस्कृति परिपूर्ण संस्कृति है। इसमें सभी प्रकार की क्षमता, योग्यता एवं स्वभाव वाले जीवों के लिए उचित स्थान एवं व्यवस्थाएँ हैं।

(६) सोलह संस्कारों की दिव्य धरोहर : संस्कृति वही है जो मानव के तन-मन, बुद्धि-विचार और आचरण को सुसंस्कारित करे। गर्भाधान संस्कार से लेकर दाह संस्कार तक के संस्कारों की इतनी विशद और सुदृढ़ व्यवस्था केवल भारतीय संस्कृति में ही है।

(७) उत्सव और उत्साह से परिपूर्ण : यह उमंग, उत्साह, आनंद के विविधमुखी प्रकटीकरण से परिपूर्ण है। इसके सभी पर्व-त्यौहार सकारात्मक पर्व हैं, खुशी के पर्व हैं। मकर संक्रांति, महाशिवरात्रि, होली, गुडी पड़वा, चेटीचंड, श्रीराम नवमी, हनुमान जयंती, गुरुपूर्णिमा, रक्षाबंधन, गणेशोत्सव, जन्माष्टमी, नवरात्र, दशहरा, शरद पूर्णिमा, दीपावली आदि अनेक पर्व-त्यौहारों की शृंखला भारतीय संस्कृति के सिवा भूतल की अन्य किसी संस्कृति में नहीं है।

रजि. समाचार पत्र

लोक कल्याण सेतु

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २७ अंक : ४ (निरंतर अंक : ३१६)
प्रकाशन दिनांक : १५ अक्टूबर २०२३ मूल्य : ₹ ४.५०
पृष्ठ संख्या : ३० (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

सम्पर्क पता :
'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन : (०७९) ३९८७७७३९

सदस्यता शुल्क :

भारत में :		विदेशों में :	
(१) वार्षिक :	₹ ४५	(१) पंचवार्षिक :	US $५०
(२) द्विवार्षिक :	₹ ८०	(२) आजीवन :	US $१२५
(३) पंचवार्षिक :	₹ १९५		
(४) आजीवन :	₹ ४७५		

❊ विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग ❊

अनादि	DIGIANA		सेवाकार्य भी	
रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे	रोज रात्रि १० बजे	Asharamji Bapu	Asharamji Ashram	Mangalmay Digital
		यूट्यूब चैनल्स		

❊ 'अनादि' चैनल टाटा स्काई/प्ले (चैनल नं. ११७०) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबलों पर उपलब्ध है।
❊ 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है। ❊ 'अराधना' चैनल जम्मू में JK Cable पर उपलब्ध है।

लोक कल्याण सेतु ई-मैगजीन के रूप में भी पढ सकते है। ई-मैगजीन अथवा हार्ड कॉपी के सदस्य बनने के लिए क्लीक करो...
www.lokkalyansetu.org

लोक कल्याण सेतु रुद्राक्ष मनका योजना :
पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका या जप-माला प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर !...सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

इस अंक में...

- **विश्व-शांति हेतु क्या उद्बोधन है...**

कवर स्टोरी वर्तमान में इजराइल और फिलीस्तीन के बीच चल रहा युद्ध सुर्खियों में है। अभी तक जान-माल का काफी नुकसान हो चुका है। इसलिए जनता में इन चर्चाओं का उफान आ गया है कि 'कहीं पूरा विश्व तृतीय विश्वयुद्ध की ओर अग्रसर तो नहीं हो रहा है ?'... ४

- दिवाली का पूरा लाभ उठाना चाहते हैं तो........................ ५
- सिद्धांत वेदों के, नाम पश्चिमी वैज्ञानिकों का : ISRO............८
- अनगिनत लोग करेंगे इन दिव्य विभूति को नमन...............१०
- सनातन धर्म पर टिप्पणी का विरोध – सचिन शेरे.............११
- साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज के महानिर्वाण दिवस पर होंगे विभिन्न कार्यक्रम.............१३
- भारतीय संस्कृति के प्रतीकों के पीछे है गजब का विज्ञान – धर्मेन्द्र गुप्ता.......................... १५
- गौ को संरक्षित राष्ट्रीय पशु घोषित करे केन्द्र सरकार : न्यायालय – अलख महता...............१८
- हिन्दू धर्म पर हो रहे कुठाराघात के खिलाफ एकजुट होना पड़ेगा – आचार्य श्री सुशीलजी............ २०
- नवयौवन देनेवाली सब्जी....................................... २१
- बही आनंद, उल्लास, श्रद्धा व भक्ति की सरिता...............२३
- गाड़ी चूर-चूर, यात्री स्वस्थ भरपूर – सचिन यादव..........२४
- अलग अंदाज में मनाया रक्षाबंधन...............................२५
- सुख-समृद्धि हेतु कार्तिक पूर्णिमा पर करें ये उपाय........... २७

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम | **प्रकाशक और मुद्रक :** राकेशसिंह आर. चंदेल | **प्रकाशन-स्थल :** संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) | **मुद्रण-स्थल :** हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर, (हि.प्र.) -१७३०२५ | **सम्पादक :** रणवीर सिंह चौधरी

Email: lokkalyansetu@ashram.org, ashramindia@ashram.org Website: www.lokkalyansetu.org, www.ashram.org

मानव के मंगल का बिल्कुल यथार्थ, कारगर मार्ग दिखाया है।

कैसे स्थापित हो विश्व-शांति ?

'सबका मंगल, सबका भला' चाहनेवाले पूज्य बापूजी कहते हैं कि **"परस्परं भावयन्तु।** एक-दूसरे की भलाई चाहो, एक-दूसरे का मंगल चाहो, एक-दूसरे को उन्नत करो, परस्पर सहानुभूति रखो। इसीसे हमारा, देश का और मानव-जाति का मंगल होगा।

राष्ट्रों, प्रांतों, समाजों, व्यक्तियों की उन्नति का एक ही उपाय है - अद्वैत ज्ञान का अनुसरण। सबमें एक, एक में सब की भावना - **वासुदेवः सर्वम्...** यह अद्वैत ज्ञान ज्यों-ज्यों भूलते गये, त्यों-त्यों दुःखों में गरकाब होते (डूबते) गये।

इससे बचने का केवल एक ही सुंदर उपाय है कि 'मानव-जाति में कलह न हो, अशांति न हो, झगड़े न हों प्रभु! इसलिए हम तेरे को पुकार रहे हैं।' बस, यह भावना करके अपने-अपने घर में कीर्तन चालू करो। श्रद्धा-प्रीति से भगवन्नाम जप-यज्ञ करो। **सबका मंगल हो, सबका भला हो।"**

आज यदि पूज्यश्री का अनमोल प्रत्यक्ष मार्गदर्शन समाज को मिलेगा तो समाज में भगवत्शांति, निर्विकारी प्रेम, आत्मिक आनंद और ईश्वरीय ज्ञान की गंगा बहेगी।

पटाखों के बिना भी मन सकती है दिवाली

दिवाली का पूरा लाभ उठाना चाहते हैं तो...

पटाखों के बिना दीपावली का पर्व मनाने का शानदार तरीका सीखने आ रहे हैं हजारों की संख्या में विद्यार्थी अहमदाबाद के मोटेरा स्थित संत श्री आशारामजी आश्रम में। यहाँ दिवाली पर १२ से १८ नवम्बर तक होगा 'दीपावली विद्यार्थी अनुष्ठान शिविर'।

सिद्धांत वेदों के नाम पश्चिमी वैज्ञानिकों का : ..... ISRO

इसरो के अध्यक्ष एस. सोमनाथ

इसरो ने भी स्वीकारा वेदों के सिद्धांतों की ताकत को

इसरो के अध्यक्ष एस. सोमनाथ ने २४ मई २०२३ को महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय (म.प्र.) के दीक्षांत समारोह में

उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा : ''बीजगणित, वर्गमूल, स्थापत्य कला (architecture), ब्रह्मांड की संरचना, धातु विज्ञान, वायुयान-चालन तथा समय के सिद्धांत का सर्वप्रथम उल्लेख वेदों में मिलता है। बाद में वे सिद्धांत अरब देशों के माध्यम से यूरोप पहुँचे और उन्हींको पश्चिमी वैज्ञानिकों की खोजों के रूप में स्वीकारा जाने लगा।''

हमारे वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों, पुराणों आदि गौरवपूर्ण ग्रंथों में वर्णित सर्वहितकारी ज्ञान के सूत्रों को समझें तो पता चलता है कि सारे आविष्कारों के मूल में भारत का सनातन विज्ञान है। इस बात का समर्थन कई अन्य विद्वान भी करते हैं।

विश्व संस्कृति का उद्गम-स्थान : भारतवर्ष

जर्मनी के प्रख्यात विद्वान मैक्स मूलर भारतीय संस्कृति को कुछ अंश में ही समझने के बाद उसके प्रशंसक बन गये। वे कहते हैं : ''यदि मुझसे पूछा जाय कि किस देश में मानव-मस्तिष्क का सबसे

९ नवम्बर को
दुनिया के अनगिनत लोग
करेंगे इन

दिव्य विभूति को नमन

९ नवम्बर को माँ महँगीबाजी का महानिर्वाण दिवस है। नैतिक पतन और स्वार्थ से भरे इस युग में मानवीय संवेदना, परदुःखकातरता, सरलता, कर्तव्यपरायणता आदि गुणों को विकसित करना समाज की अनिवार्य आवश्यकता है। इन सभी सद्गुणों की खान थीं ये माँ।

अहमदाबाद आश्रम में माँ महँगीबाजी के समाधि-स्थल पर उनकी पुण्यतिथि पर भव्य कार्यक्रम किया जायेगा। आइये जानते हैं उनके जीवन के कुछ संस्मरण –

पूज्य बापूजी की मातुश्री पूजनीया माँ महँगीबाजी मातृशक्ति के सदुपयोग की कला को बड़ी ही सूक्ष्मता से जानती थीं। उनके जीवन के समता, निष्काम सेवा, गुरुभक्ति व सर्वत्र ईश्वरभाव से सराबोर अनेक ऐसे प्रसंग हैं जो बहुत ही प्रेरणादायी व शिक्षाप्रद हैं। उनकी पुत्री किस्सी दादी कुछ प्रसंगों को बताते हुए कहती हैं :

संस्कार-सिंचन

अम्मा (माँ महँगीबाजी) स्वयं तो ईश्वर की पूजा-अर्चना, ध्यान करती ही थीं, पूज्य बापूजी में भी ऐसे ही संस्कार उन्होंने बाल्यकाल से ही डाले थे। बालक आसुमल भजन, ध्यान करते थे और शनिवार को उपवास रखते थे। उपवास के दिन केवल एक समय ही खाते थे। अम्मा ने आसुमल को छोटी उम्र में ही ध्यान का स्वाद लगा दिया था। ध्यानस्थ आसुमल के सम्मुख मक्खन-मिश्री की कटोरी रखकर बोलती थीं : ''बेटा ! आँखें खोल। प्रभु ने तुम्हें प्रसाद दिया है।''

शुरू से ही अम्मा का बाँटने का स्वभाव था। वे छाछ बाँटतीं और छाछ के साथ मक्खन का लोंदा भी दे देती थीं। उनके उदार स्वभाव से आसपास के बच्चे परिचित थे और छाछ बिलोते समय आ जाते थे।

कुछ बच्चे कहते : ''सबको बाँटोगी तो हमको कम मिलेगा।''

अम्मा : ''ये सब अपने ही हैं। जिस बच्चे को नहीं मिलेगा वह रोते हुए घर जायेगा तो उसकी माँ उसे मारेगी।''

क्या बताते हैं वैज्ञानिक शोध ?

भारतीय संस्कृति के प्रतीकों के पीछे है

गजब का विज्ञान

ॐ और शंख जैसे प्रतीकों के विषय में क्या बताते हैं वैज्ञानिक शोध ?

सनातन संस्कृति पूर्णतः वैज्ञानिक है। भारत के ऋषि-मुनियों द्वारा खोजे गये प्रतीक भी मानव-जीवन के लिए बहुत उपयोगी हैं। आधुनिक विज्ञान भी कई अनुसंधानों के बाद अब यह बात स्वीकार कर रहा है। आइये जानते हैं कुछ प्रतीकों के पीछे का विज्ञान :

(१) ॐकार : 'ॐ' आत्मिक बल देता है। ॐकार के उच्चारण से जीवनीशक्ति ऊर्ध्वगामी होती है। इसके ७ बार के उच्चारण से शरीर के रोगों के कीटाणु दूर होने लगते हैं एवं चित्त से हताशा-निराशा भी दूर होती है। यही कारण है कि ऋषि-मुनियों ने प्रायः सभी मंत्रों में 'ॐ' का समावेश किया है।

'बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय' के शोधपत्र के

गौ को संरक्षित राष्ट्रीय पशु घोषित करे केन्द्र सरकार : न्यायालय

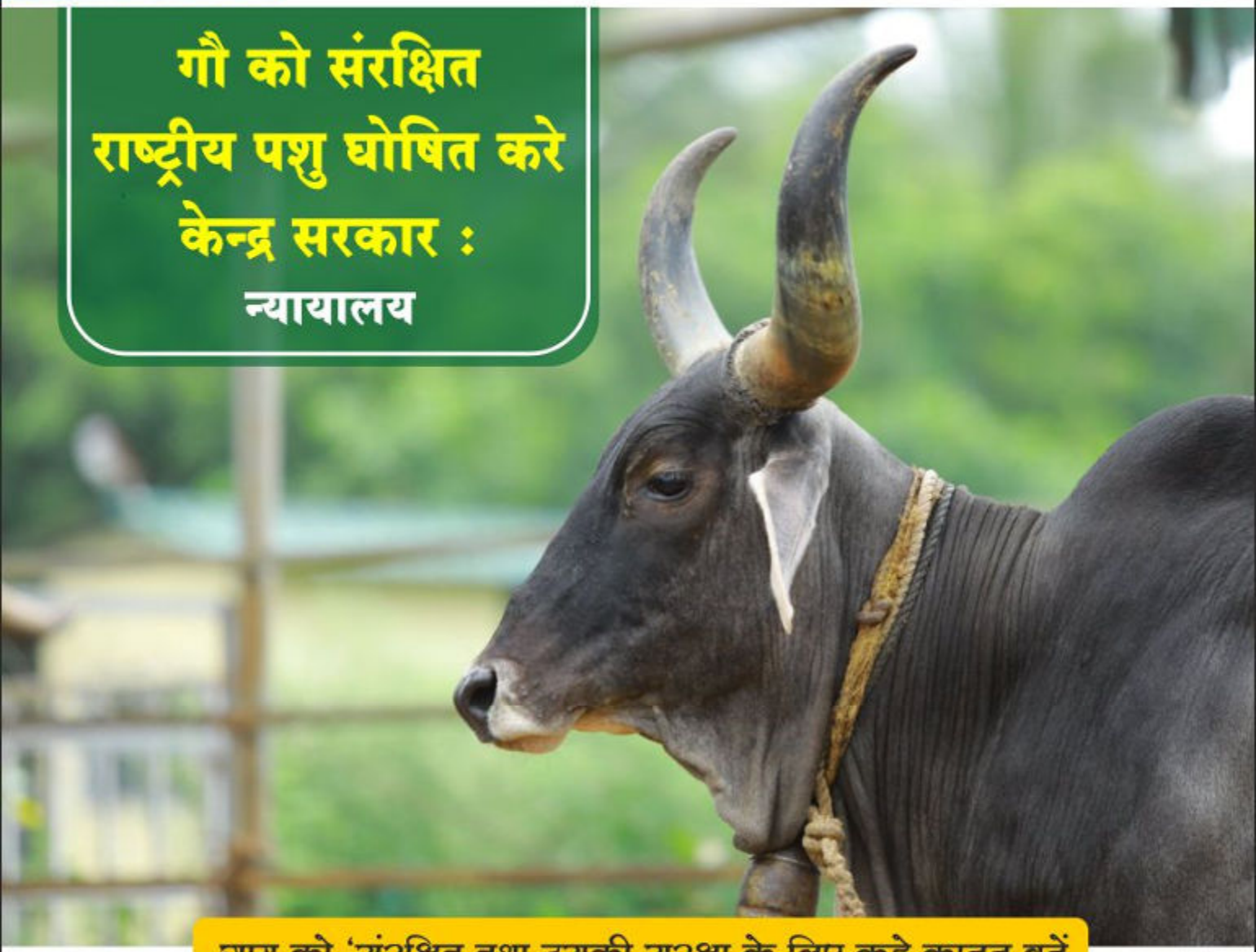

गाय को 'संरक्षित तथा उसकी सुरक्षा के लिए कड़े कानून बनें

इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ के न्यायाधीश शमीम अहमद ने कहा कि ''पुराणों आदि के अनुसार जो गौ-हत्या करता है या उसे करने की अनुमति देता है उसे उतने वर्षों तक नरक में सड़ाया जाता है जितने उसके शरीर में बाल हैं। हिन्दू धर्म में गाय को दैवी व प्राकृतिक कृपा का प्रतिनिधि माना जाता है इसलिए गायों की सुरक्षा और पूजन होना चाहिए...

देश के कई राज्यों में गौ-हत्या पर कानूनन प्रतिबंध होने पर भी आये दिन गौ-हत्या से जुड़ी खबरें सामने आती रहती हैं। यह बड़ा ही गम्भीर विषय है। हाल ही में इस विषय पर इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ के न्यायाधीश शमीम अहमद ने कहा कि ''पुराणों आदि के अनुसार जो गौ-हत्या करता है या उसे करने की अनुमति देता है उसे उतने वर्षों तक नरक में सड़ाया जाता है जितने उसके शरीर में बाल हैं। हिन्दू धर्म में गाय को दैवी व प्राकृतिक कृपा का प्रतिनिधि माना जाता है इसलिए गायों की सुरक्षा और पूजन होना चाहिए। आशा है कि केन्द्र सरकार गौ-हत्या को रोकने के लिए उपयुक्त निर्णय लेगी और गाय को 'संरक्षित राष्ट्रीय पशु'

सिनर्जी हॉट व कोल्ड ड्रिंक

उत्तम होमियोपैथिक औषधियों का सुंदर समन्वय

✲ एक ऐसा प्राकृतिक एनर्जी ड्रिंक, जो आपके पूरे परिवार को दिनभर दे स्फूर्ति व करे स्वास्थ्य-सुरक्षा ✲ चाय की लत छुड़ाने और उसके दुष्प्रभावों से बचने हेतु चाय का एक उत्तम विकल्प ✲ मस्तिष्क की कार्यक्षमता व एकाग्रता बढ़ाये ।

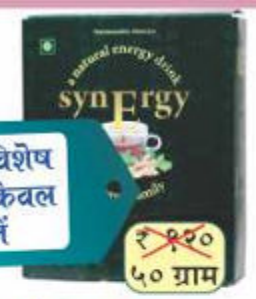

हेल्थ टॉनिक अल्फाल्फा 1X

यह दुबले-पतले व कमजोर शरीर वालों, स्तनपान करानेवाली माताओं एवं शिशुओं के लिए पुष्टिप्रद रसायन है । यह टेबलेट भूख बढ़ाती है तथा शारीरिक और मानसिक थकान दूर कर स्फूर्ति की वृद्धि करती है ।

तिलक केसर व चंदन युक्त

✲ बुद्धिबल, सत्त्वबल, मेधाशक्ति, सौंदर्य, तेज व सूझबूझ वर्धक ✲ आज्ञाचक्र को सुविकसित कर विचारशक्ति की वृद्धि में सहायक ✲ मस्तिष्क-संबंधी क्रियाओं को नियंत्रित, संतुलित कर निर्णयशक्ति बढ़ाने में मददरूप ।

गुलाब चूर्ण

✲ पोषक तत्त्वों से भरपूर ✲ इससे नियमित मंजन करने से दाँत एवं मसूड़े बनें मजबूत एवं मुँह की दुर्गंध, दाँतों का हिलना, दाँतों का दर्द, मसूड़ों से खून आना, मसूड़ों की सूजन आदि दंत-रोगों में मिले लाभ । ✲ यकृत (liver), आमाशय एवं हृदय के लिए बलप्रद । ✲ झुर्रियाँ हटाये, त्वचा में निखार लाये । ✲ जोड़ों के दर्द एवं सूजन, मधुमेह (diabetes), हृदयरोग, आमाशय व्रण (peptic ulcer), दस्त, रक्तस्राव आदि रोगों में लाभदायी ।

उत्तम स्वास्थ्य व ऊर्जा प्रदायक, पाचक, रोगनाशक अद्‌भुत योग पंचरस

यह तुलसी, हल्दी, अदरक, आँवला एवं पुदीना - इन पाँचों के मिश्रण से बना अत्यंत लाभदायी औषध-योग है । यह भूखवर्धक, पाचक, कृमिनाशक एवं हृदय के लिए हितकर अनुभूत रामबाण योग है । इसके सेवन से पाचनशक्ति सबल होकर शरीर स्वस्थ, मजबूत व ऊर्जावान बनता है, चेहरे की सुंदरता में निखार आता है । रोगप्रतिकारक शक्ति (immunity), स्फूर्ति व प्रसन्नता बढ़ती है । यह मोटापा, मधुमेह (diabetes), हृदय की रक्तवाहिनियों का अवरोध, उच्च रक्तचाप (hypertension), कोलेस्ट्रॉल-वृद्धि आदि में अत्यंत लाभदायी है ।

केसर व सफेद मूसली युक्त पुष्टि कल्प

यह अनुभूत कल्प स्वादिष्ट, पुष्टिकर तथा तेज, ओज, बल, वीर्य व बुद्धि वर्धक है । संयम-ब्रह्मचर्य के पालन के साथ इसके सेवन से शरीर सुदृढ़ व सशक्त होता है ।

पुनर्नवा मूल (टेबलेट)

यह हृदयरोग व गुर्दों (kidneys) के विकारों - पथरी, किडनी फेल्योर, सूजन आदि में विशेष लाभ करती है । यकृत (liver) का कार्य सुधारकर रक्त की वृद्धि करती है ।

शक्ति सुरक्षा वीर्य, बल व ओज का संरक्षक

यह अनुभूत योग वीर्य की रक्षा कर बल, ओज, बुद्धि व आयु को बढ़ाता है । इससे वीर्य पुष्ट व गाढ़ा होता है । शारीरिक शक्ति की सुरक्षा होकर शरीर बलवान बनता है । शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, धातु दौर्बल्य, प्रदररोग आदि समस्याओं की यह बेजोड़ औषधि है ।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

सूरत में जन्माष्टमी ध्यान योग साधना शिविर

५ दिवसीय

RNI No. 66693/97
RNP No.GAMC-1253-A/2021-2023
Issued by SSPO's-AHD
Valid upto 31-12-2023

WPP No. 02/21-23
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2023)
Posting at Dehradun G.P.O. between 18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month

मालाएँ व पूज्यश्री द्वारा स्पर्शित प्रसाद पाते सदस्यता दिलानेवाले पुण्यात्मा

महिला उत्थान मंडल के रक्षाबंधन कार्यक्रमों की एक झलक

योग व उच्च संस्कार शिक्षा कार्यक्रम द्वारा उन्नत जीवन की कुंजियाँ पाते विद्यार्थी

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

दीपावली के पावन पर्व पर अहमदाबाद आश्रम के पवित्र आध्यात्मिक वातावरण में

विद्यार्थी अनुष्ठान शिविर १२ से १८ नवम्बर

"विद्यार्थियों को गुरु-आश्रम में अनुष्ठान हेतु आने का जो अवसर मिलता है यह बहुत भारी कल्याणकारी अवसर है।" - पूज्य बापूजी

सम्पर्क : बाल संस्कार विभाग, अहमदाबाद आश्रम दूरभाष : (०७९) ६१२१०७४९/५०/८८८, ९५१०३२२१००

* विद्यार्थियों के अलावा अन्य लोग भी अनुष्ठान-शिविर का लाभ ले सकते हैं। * ट्रेन के आरक्षण शुरू हो चुके हैं, जल्द ही टिकट बुक करायें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन लोक कल्याण सेतु, ऋषि प्रसाद व ऋषि दर्शन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : Lok Kalyan Setu Rishi Prasad Rishi Darshan

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम प्रकाशक और मुद्रक : राकेशसिंह आर. चंदेल प्रकाशन-स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) मुद्रण-स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पाँटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ सम्पादक : रणवीर सिंह चौधरी